Research Paper E-ISSN NO : 2455-295X | VOLUME : 9 | ISSUE : 9 | SEPTEMBER 2023

पर्यावरण प्रदूषण एवं संरक्षण : बिहार राज्य के विशेष सन्दर्भ में

मेजर (डॉ.) शम्भु नाथ सिंह [1]

[1] विभागाध्यक्ष, भूगोल, महाराणा प्रताप महाविद्यालय, मोहनिया, कैमूर.

ABSTRACT:

पर्यावरण शब्द का अर्थ हमारे चारो ओर का वातावरण है अर्थात् प्रकृति ने सम्पूर्ण जीवमंडल के लिए स्थल, जल और वायु के रुप में एक विस्तृत आवरण निर्मित किया है जिसे पर्यावरण कहा जाता है। पहले प्राकृतिक संसाधन भरपूर था उस समय पर्यावरण प्रदूषण चिन्तन का विषय नहीं था। मानव ने अपनी बुद्धि के बल पर विज्ञान क्षेत्र में प्रगति की और अपनी महत्वकांक्षाओं की पूर्ति हेतु प्राकृतिक साधनों का दोहन आरम्भ कर दिया जिससे पर्यावरण प्रदूषण की समस्या उत्पन्न हो गई। पर्यावरण संरक्षण का अर्थ पर्यावरण गुणवता में सुधार करना, उसकी रक्षा करना और उसे बनाये रखना है। बिहार प्राकृतिक आपदाओं के लिहाज से अत्यन्त असुरक्षित है जिसमें उतर बिहार अत्यन्त बाढ़ प्रवण है और दक्षिण बिहार अत्यन्त सूखा प्रवण। बिहार में मात्र 6.22 लाख हेक्टेयर भूमि पर वनाच्छादित है जो कुल क्षेत्रफल का 6.6 प्रतिशत है। बिहार के तीन शहर पटना, गया, मुजफ्फरपुर सर्वाधिक दूषित है। पर्यावरण एवं वन विभाग ने बिहार के पर्यावरण की रक्षा के लिए बहुत कार्यक्रम चला रहा है जिससे बिहार का पर्यावरण का संरक्षण हो सकेगा।

KEYWORDS:

आवरण, प्रदूषण, संतुलन, असंतुलन, संरक्षण, प्रवण, दशकीय, नगरीयकरण, जैव विविधता, क्षरण, जलाशय, जागरुकता।

पर्यावरण शब्द का अर्थ हमारे चारो ओर का वातावरण है अर्थात् प्रकृति ने सम्पूर्ण जीवमंडल के लिए स्थल, जल और वायु के रुप में एक विस्तृत आवरण निर्मित किया है जिसे पर्यावरण कहा जाता है। पर्यावरण वह है जो प्रत्येक जीव के साथ जुड़ा हुआ है, हमारे चारो तरफ वह हमेशा व्याप्त होता है। सामान्य अर्थों में यह हमारे जीवन को प्रभावित करने वाले सभी जैविक और अजैविक तत्वों, तथ्यों, प्रक्रियाओं और घटनाओं के समुच्चय से निर्मित इकाई है। यह हमारे चारो ओर व्याप्त है और हमारे जीवन के प्रत्येक घटना इसी के अन्दर सम्पादित होती है तथा हम मनुष्य अपनी समस्त क्रियाओं से इस पर्यावरण को भी प्रभावित करते हैं। इस प्रकार एक जीवधारी और उसके पर्यावरण के बीच अन्योन्याश्रय सम्बन्ध भी होता है।

पर्यावरण और प्रदूषण– पृथ्वी एवं वायुमंडल ही हमारे जीवन के मुख्य आधार है। दोनों के प्रति हमारा भी कर्तव्य है, दोनों से जितना लें उतना उन्हें वापस दे भी। एक समय था जब धरती असीमित दिखती थी और प्राकृतिक संसाधन भरपूर दिखाई देते थे उस समय पर्यावरण प्रदूषण चिन्तन का विषय नहीं था। उस समय मानव प्रकृति के साथ एक संतुलन बनाये हुए शांति के साथ जीवन–यापन में लगा था। मानव की आवश्यकता कम थी और उन्हें वह प्रकृति से सहजता के साथ प्राप्त कर लेता था। उसे अपनी आवश्यकताओं को पूरा करने में प्राकृतिक असंतुलन अथवा प्रदूषण उत्पन्न होने का भय नहीं था। मानव यह भी भली–भॉति समझता था कि प्रकृति मे सभी जीव, वनस्पति एक–दूसरे पर पूरी तरह से आश्रित है और वह स्वयं भी प्रकृति की इस जंजीर में मात्र एक कड़ी है।

धीरे–धीरे समय बदला, मानव ने अपनी बुद्धि के बल पर विज्ञान के क्षेत्र में प्रगति की और अपनी महत्वकांक्षाओं की पूर्ति हेतु प्राकृतिक संसाधनों का दोहन आरम्भ कर दिया। प्रकृति के इस मूल संरचना और संतुलन को विकृत करने के कारण ही भूकम्प, सूखा, अतिवृष्टि, धारा की उष्णता, जीवन रक्षक, छतरी, ओजोन परत में छिद्र, अम्लीय वर्षा तथा अनेकानेक भयंकर रोगों का आक्रमण हो रहा है। अतः पर्यावरण प्रदूषण की समस्या, वैश्विक संकट के भयावह रुप में भी हमारे सामने है यदि इसका उपचार न किया गया तो मानव जीवन का विनाश तो निश्चित ही है, पशु–पक्षी और वनस्पति का अन्त भी नहीं रोका जा सकेगा। हमारा जीवन निरोग स्वस्थ रहे, इसके लिए आवश्यक है कि स्वच्छ जल, शुद्ध वायु, पवित्र अन्न और फल तथा सगुन मिट्टी सोन्धी गन्ध उपलब्ध होती रहे यह प्रदूषण रहित वातावरण में ही असम्भव है। आज तो मिट्टी, जल, वायु और अन्न भी प्रदूषित हो गये हैं। भारी उद्योगों की चिमनियों, मोटर, गाड़ियों, वायुयानों और उपग्रह के धुएँ अम्लीय गैसों तथा रासायनिक मिश्रण के कारण वायुमंडल में कार्बनडाई ऑक्साइड की मात्रा बढ़ जाने से साँस लेने के लिए शुद्ध हवा भी नहीं मिलेगी। इसी सघनता ने ओजोन छिद्र का निर्माण करके पृथ्वी का तापक्रम बढ़ा दिया है। वैज्ञानिकों के मत में यदि वायुमंडल में विषैली गैस तथा धुआँ बढ़ता रहा तो इस शताब्दी के बाद पृथ्वी का तापक्रम $4^{0}C$ तक बढ़ सकता है जिससे आर्कटिक और अंटार्कटिक के विशाल हिमखंड पिघलकर समुद्र के जल–स्तर में वृद्धि कर देगा जिसके कारण विश्व के समुद्र तटीय नगर जैसे– कोलकता, मुम्बई, चेन्नई आदि का तो अस्तित्व ही नहीं रह पायेगा।

महत्वपूर्ण पर्यावरणीय दिवस–

1. विश्व ओजोन दिवस
2. विश्व पृथ्वी दिवस
3. विश्व पर्यावरण दिवस
4. विश्व जनसंख्या दिवस
5. वन महोत्सव दिवस

उपर्युक्त दिवस के अन्तर्गत विभिन्न सम्मेलन हुई जिससे स्पष्ट है कि भारत, बिहार ने ही नहीं बल्कि सम्पूर्ण राष्ट्र वर्तमान समय में पर्यावरण प्रदूषण स परेशान एवं चिंतित है जो कि प्राकृतिक प्रदत सभी जीवों धीरे–धीरे नष्ट के कगार पर आ चुके हैं। साथ ही साथ हमारे अर्थव्यवस्था भी पूर्ण रुप से प्रभावित हो रही है क्योंकि आज समस्त उद्योग प्राकृतिक प्रदत वस्तुओं पर ही निर्भर है और उसके नुकसान सम्पूर्ण राष्ट्र का नुकसान है।

इसके सम्बन्ध में यहॉ तक कहा जा सकता है कि पर्यावरण एवं मानव। जिस प्रकार एक स्वस्थ मनुष्य के शरीर में कोई भी दिक्कत या तकलीफ होती है तो मनुष्य पूर्ण रुप से परेशान होता है और उसकी सम्पूर्ण गतिविधियॉ प्रभावित होती है। ठीक उसी प्रकार पर्यावरण से सम्बन्धित कोई भी सुझाव या उठाये गये कदम किसी क्षेत्र विशेष, स्थान, राज्य या राष्ट्र की परेशानी नहीं है, सम्पूर्ण राष्ट्र की परेशानी है। अतः आवश्यकता इस बात की है कि कोई भी ठोस कदम उठाकर सम्पूर्ण विश्व को पर्यावरण प्रदूषण से बचाया जा सके तभी मेरा बिहार भी प्रदूषण मुक्त होगा।

पर्यावरण एवं संरक्षण– व्यक्तियों, समूहों और सरकारों द्वारा प्राकृतिक पर्यावरण की रक्षा करने की प्रथा है। इसका उद्देश्य प्राकृतिक संसाधनों और मौजूदा प्राकृतिक पर्यावरण का संरक्षण करना है। अर्थात् पर्यावरण संरक्षण का अर्थ पर्यावरण की गुणवता में सुधार करना, उसकी रक्षा करना और उसे बनाये रखना है। दूसरे शब्दों में पर्यावरण संरक्षण का तात्पर्य है कि हम अपने चारो ओर के वातावरण को संरक्षित करें तथा उसे जीवन के अनुकुल बनाये रखें क्योंकि पर्यावरण और प्राणी एक–दूसरे पर आश्रित है। पर्यावरण संरक्षण बहुत जरुरी है।

बिहार प्राकृतिक आपदाओं के लिहाज से अत्यन्त असुरक्षित है, जिसमें उतर बिहार अत्यन्त बाढ़ प्रवण है और दक्षिण बिहार अत्यन्त सूखा प्रवण। राज्यस्तरीय जलवायु प्रतिदर्शों और सुमेद्यता और उसके प्रभावों के लिहाज से अधिक असुरक्षित है। हमारा अस्तित्व प्राकृतिक पर्यावरण पर ही निर्भर है। प्राकृतिक, मशीनी एवं नृवैज्ञानिक प्रक्रियाओं जैसे– कार्बनडाई ऑक्साइड, मिथेन आदि ग्रीन हाउस गैसों के कारण पृथ्वी के जलवायु में हुए दीर्घकालिक परिवर्तन को जलवायु परिवर्तन कहा जाता है। वैश्विक जलवायु परिवर्तन का असर बिहार राज्य पर भी देखी जा रही है। भौगोलिक परिस्थितियों के अनुसार बिहार को दो भागों में विभक्त किया जाता है– 1. उतर का मैदानी भाग 2. दक्षिण का मैदान। तापमान में निरन्तर वृद्धि होने के कारण हिमालय पर्वत की वर्फ पिघलती जा रही है जिससे उतरी बिहार में बाढ़ का प्रकोप होगा तथा दक्षिण बिहार में सूखा पड़ेगा क्योंकि तापमान वृद्धि से छोटानागपुर पठार का जल सुखता जा रहा है इसलिए वहॉ से आने वाली नदियों में पानी का भारी अभाव हो जायेगा। जलवायु परिवर्तन बिहार के लिए बड़ी आपदा बन सकती है। बिहार में तापमान की बढ़ोतरी वैश्विक जलवायु परिवर्तन के कारण ही हो रहे हैं। तापमान के बढ़ोतरी से फसलों में कमी आएगी। बिहार मानसूनी वर्षा पर निर्भर करता है। वैश्विक जलवायु

परिवर्तन, मौसम–चक्र में असर डालता जा रहा है जिससे बिहार पर बूरा असर पड़ेगा।

बिहार का भौगोलिक क्षेत्रफल 94.2 लाख हेक्टेयर है इसमें से मात्र 6.22 लाख हेक्टेयर भूमि पर वनाच्छादित हैं जो कुल क्षेत्रफल का 6.6 प्रतिशत है। बिहार में अत्यन्त सघन वन क्षेत्र 231 हेक्टेयर है जो मात्र नवादा जिला में स्थित है। मध्यम सघन वन क्षेत्र 3280 हेक्टेयर है और खुला वन 3334 हेक्टेयर है। शेखपुरा जिला में किसी प्रकार का वन नहीं है। बक्सर, जहानाबाद, सिवान, शिवहर, गोपालगंज, खगड़िया आदि जिला में जो जंगल है वह मात्र झाड़–झुरमुठ ही है जो जंगल होने का मात्र बोध कराता है। जनसंख्या में लगातार वृद्धि से खाद्यान्न उत्पादन हेतु उपलब्ध भूमि पर लगातार दबाव बढ़ता रहा जिससे वन की लगातार की कटाई होती रही भौगोलिक क्षेत्र का मात्र 6.6 प्रतिशत ही वन क्षेत्र बचा हुआ है। वन की सिमटती हुई स्थिति ने यहॉ के लोगों के जीवन पर प्रतिकुल प्रभाव डाला है।

जल प्रदूषण– जब मानवीय अथवा भौतिक कारणों से अन्यान्य प्रदूषण जल में मिश्रित होता है तब उसकी प्राकृतिक मौलिकता समाप्त हो जाती है। वह जीवों एवं वनस्पतियों के लिए हानिकारक हो जाता है। जल की यह अवस्था जल प्रदूषण कहलाती है। औद्योगिक इकाइयों द्वारा जलधाराओं में गन्दे जल की निकासी, शहरों में नालों का नदियों में गिरना, जानवरों तथा अधजली लाशों को नदियों को फेंकने आदि से जल श्रोत प्रदूषित हो रहे हैं। बिहार में गंगा सर्वाधिक प्रदूषित नहीं है सिर्फ बिहार में इस नदी में 115 मिलियन लीटर प्रति दिन गंदे जल का प्रवाह होता है। पटना, बरौनी, भागलपुर शहरों के निकट सबसे अधिक प्रदूषण का प्रवाह होता है। उतर बिहार में सोन, पुनपुन, गंडक, कोसी ईत्यादि नदियॉ भी प्रदूषण से ग्रसित हो गई है। बरौनी स्थित तेलशोधक कारखाने से तेलयुक्त अवशिष्ट जल के गंगा में प्रवाहित होने के कारण जल के प्रदूषण के साथ–साथ इस जल में आग भी लग जाती है जो जीव–जन्तुओं को नुकसान करने के साथ–साथ पर्यावरण को भी नुकसान पहुॅचाता है। गंगा बिहार की जीवनदायिनी नदी है लेकिन निरन्तर बढ़ते प्रदूषण एवं औद्योगिक कचड़े के विसर्जन ने इसे विश्व की प्रदूषित नदियों के कतार में खड़ा कर दिया है। गंगा के प्रदूषण को कम करने के लिए 'गंगा एक्शन प्लान' की शुरुआत की गई है।

वायु प्रदूषण– पृथ्वी को चारो ओर से घेरे हुए वायु के विस्तृत फैलाव को वायुमंडल कहते हैं। वायुमंडल कई गैसों का मिश्रण है। इसके अतिरिक्त जलवाष्प तथा धूलकण भी उपस्थित है। जीवित रहने के लिए शुद्ध वायु की आवश्यकता होगी। बिहार में पर्यावरण को नुकसान पहुॅचाने में धूल और धूऑ की भूमिका अग्रगणी बनती जा रही है। वायु में धूलकणों की वृद्धि जीवन को नुकसान पहुॅचा सकती है। श्वॉस रोग, फेफड़ों की बिमारियॉ वायु प्रदूषण के कारण बढ़ते जा रहे हैं। उद्योगों से बिहार में वायु प्रदूषण फैल रही है। नवीन उद्योगों में रासायनिक पदार्थों, पेट्रोल, कोयले ईत्यादि के अन्धाधुन्ध प्रयोग होने से वायु प्रदूषण हो रहे हैं।

कचरा प्रदूषण– नगरों में कचरा प्रबन्धन ठीक से नहीं रहने के कारण पर्यावरण और लोगों के स्वास्थ के लिए हानिकारक होता जा रहा है। अस्पतालों से निकलने वाला अवशिष्ट पदार्थ भी कचरों से मिल जाने पर भी पर्यावरण और लोगों के स्वास्थ को नुकसान पहुॅचा रहा है। पटना में 36 से अधिक गंदी बस्तियॉ हैं। यहॉ से प्रतिदिन कचरा उत्पादित होता रहता है जो सड़ता रहता है। चलन्त चिमनियों से निकली कार्बनडाई ऑक्साइड उत्सर्जित होने से वातावरण का तापमान बढ़ रहे हैं। पेंड–पौधे भी सूखते जा रहे हैं।

जनसंख्या वृद्धि– बिहार की जनसंख्या निरन्तर वृद्धि होती जा रही है। 1901–11 के बीच बिहार की कुल जनसंख्या 2.73 करोड़ थी जो 2011 में बढ़कर 10.41 करोड़ हो गई। यहॉ दशकीय वृद्धि दर 3.67 प्रतिशत से बढ़कर 2011 में 25.41 प्रतिशत हो गई। बिहार की जनसंख्या 1951 में 2.9 करोड़ थी जो 2021 में 12.7 करोड़ हो गई जो लगभग चार गुना वृद्धि है। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद 1951 से 1991 तक बिहार की जनसंख्या वृद्धि तीव्र गति से हुई है। इन चार दशकों की अवधि में बिहार की जनसंख्या लगभग तीन गुनी हो गई। जनसंख्या बढ़ोतरी के कारण बिहार में 11.33 प्रतिशत नगरीकरण हुआ। पटना में सबसे अधिक 43.1 प्रतिशत की बढ़ोतरी हुई। जनसंख्या बढ़ोतरी के कारण प्राकृतिक संसाधनों पर भारी भार भी आ गया। बढ़ती जनसंख्या से गॉवों में रोजगार का अभाव हो गया, कृषि भूमि बॅटवारे के कारण छोटा से छोटा होता जा रहा है। सुविधाओं का भारी अभाव हो गया। इन सब कारणों से पर्यावरण का भी काफी नुकसान हो गया। विश्व स्वास्थ्य संगठन की 2018 में प्रकाशित एक रिपोर्ट के अनुसार विश्व में सर्वाधिक प्रदूषित चौदह शहर भारत में है। इनमें से तीन शहर पटना, गया और मुजफ्फरपुर बिहार में है।

औद्योगिक विकास– बिहार में औद्योगिक विकास अन्य राज्यों की तुलना में कम हुआ है। नदियों के किनारे स्थित पटनां, बरौनी, मुंगेर, भागलपुर, आरा, सीतामढ़ी, बक्सर, औरंगाबाद के औद्योगिक प्रांगणों से विषाक्त जल मिश्रित रसायनों के बहाव से पर्यावरण दूषित हुआ है।

बिहार को दूशित करने वाले प्रमुख उद्योग–

उद्योग	संख्या	उद्योग	संख्या
वस्त्र	40	उर्वरक	01
चीनी	28	ताप विद्युत संयंत्र	05
दवाई एवं औषधि	10	कीटनाशी	05
शराब सम्बन्धी	02	चमड़ा	05
सीमेन्ट	03	रंग	06

श्रोत– आर्थिक समीक्षा, बिहार सरकार

बिहार में जैव विविधता– किसी प्राकृतिक प्रदेश में पाई जाने वाली जंगली तथा पालतू जीव–जन्तुओं एवं पादपों की प्रजातियों की बहुलता को जैव विविधता कहते हैं। हमारा पर्यावरण दैनिक जीवन के लिए आवश्यक अनेक प्रकार की वस्तुऍ और सेवाऍ हमें प्रदान करती है। बिहार प्राकृतिक संरचना के दृष्टिकोण से विविधता वाला राज्य है। विश्व संरक्षण नियंत्रण केन्द्र के अनुसार विश्व में 16 लाख जैविक जातियॉ हैं जिनमें से लगभग 8 प्रतिशत भारत में पाई जाती है। बिहार राज्य में सबसे अधिक जैविक विविधता देखी गई है। बिहार के नदियों, जलनिमग्न क्षेत्रों, बाढ़ प्रभावित मैदानी क्षेत्रों, जंगलों एवं पहाड़ियों में अनेक दुर्लभ जैविक जातियॉ पाई जाती है। 1825 में जीव वैज्ञानिक हेमिल्टन ने गंगा में 275 प्रकार की मछलियों को दर्ज किया था। विशेषज्ञों के अनुसार बिहार में 35 प्रजातियॉ की मछली, 35 जाति के रेंगने वाले जीव, 9 प्रजाति के जल प्राणी तथा 200 प्रकार की मछलियॉ पाई जाती है।

चम्पारण, दरभंगा, सारण जिला में बाघ, हिरण, जंगली भैंसें, पूर्णिया एवं कटिहार में भेड़िया, जंगली भैंसा, लोमड़ी पाये जाते हैं। यहॉ विभिन्न प्रकार की मछलियॉ पाए जाते हैं। गंगा की डाल्फिन को संरक्षित घोषित किया गया है। बिहार में विश्व वन्य जीवन कोष के अन्तगत कार्यक्रम भी चलाए जाते हैं। बिहार में विभिन्न प्रकार के जीव–जन्तु हैं जिनमें अनेकों दुर्लभ एवं संरक्षित प्रजातियों के हैं। पुराने शाहाबाद क्षेत्र में चितल, चीकारा, भेंड़िया, नीलगाय, हिरन, जंगली बिलियॉ, तेन्दुआ बहुतायत में पाए जाते हैं। सोन नदी में घड़ियाल, कछुए तथा मगरमच्छ भी मिलते हैं। यहॉ 34 दुर्लभ प्रवासी पक्षियॉ भी निवास करते हैं। पश्चिम चम्पारण में साल, शीशम, तून, कुसुम, खैर आदि महत्वपूर्ण वनस्पति है। बॉस सहित अन्य झाड़ एवं घासनूमा वनस्पति भी प्रचूर मात्रा में पाई जाती है। बिहार के दक्षिणी भाग गया, मुंगेर एवं भागलपुर जिलों में पलास, आसन, हरे, शीशम, बबूल, सिरीस तथा बॉस के वृक्ष ज्यादा है। इसके अलावा अर्द्ध वन क्षेत्र में बेल, कदम्ब, नीम, पीपल, बरगद आदि के वृक्ष हैं।

<u>बिहार में जैव विविधता का संरक्षण</u>– जीव प्रजातियों एवं जातियों के अनवरत नष्ट होने की प्रक्रिया जैव विविधता, क्षरण कहलाती है। जैव विविधता, जल, वायु एवं मृदा की भॉति एक मुख्य प्राकृतिक साधन है। इसका क्षरण होना पर्यावरण के लिए हानिकारक है। इसलिए बिहार में जैव विविधता को संरक्षण प्रदान करने सम्बन्धी कार्य किये जा रहे हैं। वन एवं वन्य जीव की सरक्षा हेतु पन्द्रह वर्षीय कार्य योजना तैयार करने की फैसला लिया गया है। इस योजना के अन्तर्गत वन्य जीवों के शिकार एवं तस्करी में संलग्न लोगों को दन्डित करने का प्रावधान है। वन महोत्सव प्रत्येक वर्ष जुलाई माह में मनाया जाता है। इसमें वृक्षारोपण आन्दोलन को प्रात्साहित किया जाता है। बिहार सरकार तथा स्वयंसेवी संस्थाओं के सहयोग से यह कार्यक्रम चलाया जाता है। सामाजिक वानिकी के अन्तर्गत तीन कार्यक्रम है – 1. उसर भूमि पर मिश्रित वृक्षारोपण 2. जिन क्षेत्रों में वनों का ह्रास हुआ है वहॉ पुनः वन लगाना 3. आश्रय पट्टी का विकास। वन्य प्राणियों के सुरक्षा हेतु कई अभ्यारण्य और सुरक्षित क्षेत्र बनाये गये हैं। बिहार में प्रतिवर्ष 5 जून को पर्यावरण दिवस मनाया जाता है। इस दिन पर्यावरण संरक्षण के लिए संकल्प लेने के साथ–साथ जन चेतना को जागृत करने सम्बन्धी कार्यक्रम भी चलाया जाता है। डॉल्फिन क प्रति जन जागृति फैलाने के उद्देश्य से 5 अक्टूबर 2013 को बिहार में डॉल्फिन संरक्षण योजना का शुभारम्भ किया गया एवं प्रत्येक वर्ष 5 अक्टूबर को डॉल्फिन दिवस मनाने की घोषणा की गई।

पर्यावरण के अवनयन के लिए मानव और प्रकृति के बीच बिगड़ता सम्बन्ध सबसे बड़ा उतरदायी कारक है। मनुष्य ने अपने स्वार्थ–सिद्धि के लिए पर्यावरण पर चोट की है। फलतः विभिन्न प्रकार के प्रदूषण, प्राकृतिक प्रकोप, प्राकृतिक आपदाऍ आदि होने लगे हैं इसलिए पर्यावरण एवं वन विभाग ने बिहार के पर्यावरण की रक्षा करने के लिए निम्नलिखित कदम उठाये हैं–

- पर्यावरण एवं वन विभाग का नाम बदलकर 'पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन विभाग' कर दिया गया है।
- मुख्यमंत्री निजी नर्सरी योजना के तहत 31.71 लाख ईटीपी डंठल लगाए गए हैं।
- वर्षा ऋतु में प्राकृतिक वन क्षेत्रों और नहरों तथा तटबन्धों के किनारे 1.70 करोड़ पौधे लगाये गये हैं।
- कृषि–वानिकी योजना के तहत 71.06 लाख पौधे लगाये गये हैं।
- पटना के पॉच स्थानों पर ध्वनि प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड की स्थापना की गयी है।
- आगामी उद्योगों के आने पर पर्यावरण के नियंत्रण हेतु राज्य पर्यावरण

समाघात निर्धारण प्राधिकरण का गठन किया गया है।

- बिहार में हरित वृक्ष आच्छादन बढ़ाने और आम लोगों में वृक्षारोपण के प्रति जागरुकता पैदा करने के लिए 'हरियाली मिशन' की स्थापना की गई है।

बिहार में पर्यावरण संरक्षण के लिए भूमि संरक्षण, बंजर भूमि विकास, जलाशयों की सुरक्षा, सड़कों के किनारे वृक्षारोपण आदि कार्य के लिए विभिन्न सरकारी एवं निजी संस्थानों द्वारा पर्यावरण संरक्षण की योजनाएँ एवं कार्यक्रम चलाया जा रहा है। जल एवं वायु प्रदूषण नियंत्रित करने के उद्देश्य से कई कार्यक्रमों का आयोजन 'पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन विभाग' द्वारा किया गया है। प्रदूषण निवारण एवं नियंत्रण के लिए कई अधिनियम बनाये गये हैं।

बिहार के रविन्द्र कुमार सिन्हा को डॉल्फिन के संरक्षण एवं सर्वे पर किये गये अथक प्रयास के चलते 'डॉल्फिन मैन ऑफ इंडिया' की संज्ञा से अभिहित किया जाता है। पर्यावरणविद् डॉ0 विन्देश्वर पाठक को पयावरण संरक्षण सम्बन्धी कार्य करने पर प्रतिष्ठित 'स्टॉकहोम वाटर प्राईज' प्रदान किया गया था।

REFERENCES

1. पर्यावरण अध्ययन– डॉ. दशरथ सिंह एवं डॉ. एम.सी. पाल, संस्करण – 2018
2. पर्यावरण अध्ययन– डॉ. मेधा सिन्हा, संस्करण – 2006
3. लाल सुधीर – बिहार सामान्य ज्ञान, क्राउन प्रकाशन, रॉची
4. सिंह दीपनारायण – बिहार दिग्दर्शन, अरिहन्त प्रकाशन, दिल्ली
5. प्रसाद एस.एन.– ''बिहार दिग्दर्शन'', किरण प्रकाशन, दिल्ली
6. राउत सुरेन्द्र एवं भारती आशीष – 'बिहार समग्र' के.बी.सी. नैनो प्रकाशन, दिल्ली